



दैनिक राष्ट्रीय प्रस्तावना

गाँव से गवर्नेन्स तक

वर्ष : 9 अंक 82

लखनऊ, सोमवार, 07 अक्टूबर, 2019

पृष्ठ : 8

मूल्य : 2.00

राष्ट्रीय प्रस्तावना

विचार/विमर्श

लखनऊ, सोमवार, 07 अक्टूबर 2019

4

भारत में चक्रवाती बारिश और बाढ़ का प्रकोप: हर साल बढ़ती घटनायें



हर साल बढ़ती घटनायें
प्रोफ० राकेश सिंह
महानिदेशक, स्कूल ऑफ
मैनेजमेंट साइंसेस,
व अध्यक्ष, वैदिक विज्ञान केंद्र, लखनऊ-226501

भारत तीन तरफ से तटीय और चौथी तरफ हिमालय की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। 128 बिलियन की कुल आबादी के मुकाबले लगभग 560 मिलियन भारतीय आबादी 43.7% तटीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में रहती है और 171 मिलियन (14.2%) आबादी भारत के तटीय क्षेत्र और तटीय जिलों में रहती है। जो सामान्यतः निचली सतह और घनी आबादी वाले क्षेत्र होते हैं, जिनपर बाढ़ का विनाशकारी प्रभाव पड़ सकता है। इस वर्ष भारतवर्ष के तटीय क्षेत्र में बाढ़ और हिमालय क्षेत्रों में भूस्खलन के कई गुना प्रभाव से सामना कर रहे हैं।

भारत के पिछले 5 वर्षों में पठारी क्षेत्र में तूफान व हिमालय क्षेत्र में भूस्खलन का विनाशकारी सामना-

आज भारतवर्ष में बड़े चक्रवाती तूफानों और तेज हवाओं से उसके तटीय क्षेत्रों में भारी बारिश हो रही है तथा उसका दबाव पठारी क्षेत्रों में होने से मध्य प्रदेश, उत्तर-प्रदेश व बिहार आदि तक जल-प्रलय के रूप में बदल गया है। प्रत्येक साल इसकी आवृत्ति व विनाशकारी प्रभाव बढ़ रहा है कुछ घटनाओं का उल्लेख निम्नतः-

केदारनाथ आपदा (16-17 जून, 2013) :

उत्तराखंड राज्य में केदारनाथ घाटी व उसके अन्य हिस्सों में दिनांक 16-17 जून 2013 को अभूतपूर्व भूस्खलन व विनाशकारी बाढ़ आई थी। केदारनाथ मंदिर के पास 16 जून को, लगभग 7:30 बजे, भूस्खलन और तेज बारिश की तवाही का सामना करना पड़ा। प्रो. भरत राज सिंह एकमात्र ऐसे वैज्ञानिक थे, जिन्होंने घोषणा की थी कि एक घटना किसी बालू फटने की नहीं है, बल्कि हिमालय की ऊँचाई पर ग्लेशियरों के कारण घने ग्लेशियर की चारों ओर दबाने के कारण ऐसा हुआ था जिससे भारी ग्लेशियर की चारों ओर पहाड़ी बारिश के दौरान अलग होकर नीचे चली गई और विनाशकारी भूस्खलन व बाढ़ का कहर बन गई। चूंकि यह भूस्खलन और पिछले के खिस्से की आवृत्ति हिमालय क्षेत्र में अधिक तीव्रता के साथ भविष्य में बढ़ेगी और हिमालय का सम्पूर्ण क्षेत्र जन-जीवन के लिये घातक बना रहेगा।

ओडिशा में चक्रवाती फीलिन तूफान (12 अक्टूबर 2013) :

12 अक्टूबर 2013 को ओडिशा के तट पर आए भयंकर चक्रवाती तूफान «फीलिन» ने अपने साथ बहुत तेज गति की हवाएँ और भारी वर्षा ला दी जिससे राज्य के तटीय जिलों में विशेष रूप से घरो, खड़ी फसलें, बिजली और संचार व्यवस्था को व्यापक क्षति हुई। चक्रवात फीलिन के घटना के बाद, राज्य सरकार को विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक से सहयोग लेकर विशेषरूप से प्रभावित जिलों को छति से उबरने के लिए पुनर्स्थापित और पुनर्निर्माण कार्यों को तीव्रता प्रारम्भ करने की आवश्यकता पड़ी। इसपर तूफान के कारण हुए नुकसान की मूल्यांकन और प्रभावी सुधार के लिए कार्रवाई का विवरण का एक व्यापक पुनर्निर्माण व पुनर्स्थापना का खाता तूफान के कारण हुए नुकसान की मूल्यांकन रिपोर्ट और प्रभावी सुधार के लिए कार्रवाई का विवरण तैयार किया गया। यही नहीं बल्कि वे भी ऐसे प्रभावित क्षेत्रों हेतु पुनर्निर्माण और पुनर्स्थापित की आवश्यकता को दृष्टान्त रखते हेतु क्षति की सीमा व निरंतरता हेतु एक विस्तृत विश्लेषण की रणनीति भी तैयार की गई।

आंध्र प्रदेश में चक्रवाती तूफान हुदहूद (12 अक्टूबर 2014) :

11 अक्टूबर को, हुदहूद ने तीव्र गति से आगे बढ़ा और अपने केंद्र बिंदु पर आंध्र गडया। इसके बाद के सम्यंतर में, तूफान न्यूनतम तीव्रता के साथ 950 mbar (Hg में 28.05) और 185



किमी / घंटा (115 मील प्रति घंटे) की औसत हवा की गति की तीव्रता को बनाए रखते हुए, तीन मिनट में इसने 12 अक्टूबर को दोपहर के समय विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश में 17.7 ° N 83.3 ° E के पास लैंडफॉल बनाया। विशाखापत्तनम में साइक्लोन बार्निंग सेंटर के हाई विंड स्पीड रिकॉर्ड (HWSR) इंस्ट्रुमेंट द्वारा अधिकतम हवा का झोंका 260 किमी / घंटा (160 मील प्रति घंटे) का रिकॉर्ड किया गया था। शहर में तैनात डॉक्टर मौसम रडार द्वारा तूफान की केंद्र बिंदु 66 किमी (41 मील) व्यास का मापा गया था। हवाओं की ताकत ने दूरसंचार लाइनों को उखाड़कर उसे बाधित कर दिया और रडार की भी क्षतिग्रस्त कर दिया, जिससे आगे की आकड़ों के एकत्रित करने की प्रक्रिया हो गई। आंध्र प्रदेश के तटीय जिलों में व्यापक क्षति पैदा करते हुए, हुदहूद धीरे-धीरे कमजोर हो गया क्योंकि यह जमीन पर उतर की ओर चुपचावदार चक्र काट रहा था। तूफान ने अपनी धीमी गति को आगे बढ़ाया हुआ, 14 अक्टूबर को पूर्वी उत्तर प्रदेश में एक अच्छी तरह से निम्न दबाव क्षेत्र के रूप में विनष्ट किया। अधिकांश बंगाल की खाड़ी वाले तूफानों के विपरीत जो भूमि पर जल्दी से फैलकर समाप्त हो जाते हैं, हुदहूद एकमात्र उच्च कटिबंधीय तूफान रहा है, जिसका अवशेष उत्तर में हिमालय तक पहुंच गया।

गुजरात में चक्रवाती तूफान नीलोफर (31 अक्टूबर 2014) :

अरब सागर में तीसरा सबसे शक्तिशाली चक्रवात, अक्टूबर 2014 के अंत में, 205 किमी / घंटा (125 मील प्रति घंटे) से 215 किमी / घंटा (130 मील प्रति घंटे) के बीच अनुमानित अधिकतम हवाओं तक पहुंच गया। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (इसू) ने इसका नाम नीलोफर रखा; नाम पानी लिली को सम्बंधित करता है और इसे पाकिस्तान द्वारा सुझाया गया था। उत्तर पश्चिमी ओमान में तूफान के पश्चिमी इलाकों के कारण चार लोगों की मौत हो गई थी। नीलोफर की उत्पत्ति भारत और अरब प्रायद्वीप के बीच कम दबाव वाले क्षेत्र से हुई थी। यह 25 अक्टूबर 2014 को एक कम तीव्रता में पैदा हुआ और अनुकूल परिस्थितियों के कारण उत्तर की ओर चला गया। 26 अक्टूबर 2014 को कुछ परिस्थितियोंवाला त्वरित रूप से व्यतीत होकर एक चक्रवाती तेज तूफान में परिवर्तित हो गया। नीलोफर ने 28 अक्टूबर को अपनी चरम तीव्रता को प्राप्त करते हुए, एक अच्छी तरह से अपना प्रभाव केंद्र आँख और दायर विकसित किया। उस समय, नीलोफर को पश्चिमी भारत में भूस्खलन होने की उम्मीद थी, जिससे लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने और आवश्यक तैयारियों प्रारम्भ की गईं। परंतु तूफान की उच्च तीव्रता को कम दबाव ने तेजी से कमजोर कर दिया, और नीलोफर को 31 अक्टूबर 2014 को भारत के गुजरात राज्य से कम दबाव वाले क्षेत्र में समाप्त कर दिया गया।

गंधीर चक्रवाती तूफान चपला (28 अक्टूबर, 2015) :

यह उत्तर हिंद महासागर का चक्रवाती मौसम का तीसरा नामित तूफान, 28 अक्टूबर 2015 को पश्चिमी भारत के दूर-दराज से विकसित हुआ। प्रानी के ताम्रामन में रिकॉर्ड गमी से चक्रवाती तूफानों से उत्पन्न होने के कारण इसे भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने चपला नाम दिया। 30 अक्टूबर 2015 तक, तूफान ने संवहन के प्रक्रिया के माध्यम से एक अच्छी तरह से अपना क्षेत्र और केंद्र बिंदु विकसित कर लिया। उस दिन, आईएमडी के अनुसार तीन मिनट तक में 215

किमी / घंटा (130 मील प्रति घंटे) की निरंतर हवाओं का अनुमान लगाया और जेटिडब्ल्यूसी ने 240 किमी / घंटा (150 मील प्रति घंटे) की एक मिनट तक की हवाओं का अनुमान लगाया था जिससे 2007 में मात्र गोनू साइक्लोन अरब सागर में अधिक तीव्रता का पाया गया था। उच्च तीव्रता के बाद, चपला ने 1 नवंबर 2007 को सोकोट्रा के यमनी द्वीप को पार किया। तेजी गर्म हवाओं और आगे कम दबाव की हवा के झोंके ने चक्रवात को कमजोर कर दिया, हालांकि इसने 2 नवंबर को अदन की खाड़ी में प्रवेश करने पर अपनी तीव्रता को अधिक बनाए रखा, फिर भी यह पानी के अंदर का सबसे मजबूत चक्रवात जाना गया। उत्तरी सोमालिया को पार करने के बाद, चपला और कमजोर हो गई और पश्चिम व उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ गई। 3 नवंबर 2007 की शुरुआत में, तूफान का मुकाम, यमन के पास एक बहुत ही भयंकर चक्रवाती तूफान के रूप में होकर भूस्खलन तथा देश पर प्रभाव डालने वाला सबसे मजबूत तूफान का रिकॉर्ड बन पाया और अगले दिन यह तूफान धम गया।

6.0 ओडिशा में चक्रवात टिटली, (11 अक्टूबर, 2018) :

चक्रवात टिटली ने आंध्र प्रदेश में कम से कम आठ लोगों को मार डाला और 11 अक्टूबर, 2018 की सुबह भूस्खलन होने के बाद ओडिशा में तबाही का निशान छोड़ दिया। टिटली ने 130-140 किमी प्रति घंटे की रफ्तार वाली हवा के साथ एक बहुत ही भयंकर चक्रवाती तूफान के रूप में लैंडफॉल बनाया। दक्षिणी ओडिशा और उत्तरी आंध्र प्रदेश के तट को पार करने के तुरंत बाद, टिटली 90-100 किमी प्रति घंटे की हवा की गति के साथ यह भयंकर चक्रवाती तूफान कमजोर पड़ गया। दिन के दौरान, टिटली तूफान की तीव्रता कमजोर होती रही और भारत मौसम विभाग ने भविष्यवाणी की थी कि यह टिटली तूफान रात तक बिल्कुल कम प्रभावी हो जाएगा। इसके बावजूद, ओडिशा के कुछ हिस्सों के लिए एक रेड अलर्ट अर्थात् उच्चतम श्रेणी की चेतावनी जारी की गई थी। आईएमडी ने ओडिशा में भारी से भारी बारिश की भविष्यवाणी की थी और राज्य में बाढ़ का खतरा बरकरार रखा। यद्यपि ओडिशा में व्यापक क्षति हुई थी, राज्य ने साइक्लोन टिटली के कारण बिना किसी जीवन के नुकसान से शून्य हलाहल का लक्ष्य हासिल किया। ओडिशा के कुल आठ जिले-गंजाम, गणपति, खुर्दा, पुरी, जगतसिंहपुर, केंद्रपाड़ा, भद्रक और बालासोर - चक्रवात टिटली से प्रभावित थे।

फेडरल धूल तूफान से केरल में बाढ़ (19 दिसंबर, 2018) :

चक्रवात फेडरल ने आंध्र प्रदेश में हजारों लोगों को धूल व भूस्खलन से विस्थापित करने के लिए बाध्य किया। यह तूफान, विनाशकारी गाजा चक्रवात को पड़ोसी तमिलनाडु, केरल और पॉन्डिचेरी में तबाही मचाने के ठीक एक महीने बाद आया था। उस चक्रवात की वजह से हवा की गति 120 किमी प्रति घंटा हो गई, जिसने कम से कम 45 लोगों के जीवन का समाप्त किया और घरो, फसलों और बुनियादी ढांचे को भी व्यापक नुकसान पहुंचाया।

ओडिशा में चक्रवाती तूफान फोनी (03 मई 2019) :

पूर्वी भारत के तटीय शहर पुरी के पास एक विशाल उष्णकटिबंधीय चक्रवात ने 03 मई 2019, शुक्रवार को भीषण तबाही कर गया, जिससे लाखों लोगों का घर प्रभावित हुआ। जा माना जाता है कि तूफान, जिसे साइक्लोन जिसे फोनी कहा गया, ने 115 मील प्रति घंटे (एक-श्रेणी के 3 तूफान के बराबर) से अधिक हवाओं के साथ तट पर स्ट्राइक किया। यह 20 वर्षों में भारत को तबाही पहुंचाने वाला सबसे तगड़ तूफान था। ओडिशा में पुरी के करीब चक्रवात फनी ने अधिकतम हवा की गति 180-190 किमी / घंटा (कैट-3 समतुल्य) के साथ जमीनी सतही पर टकराया और भविष्यवाणी के अनुसार उत्तर-उत्तरपूर्व की ओर बढ़ता हुआ, पश्चिम बंगाल और

फिर बांग्लादेश की ओर कमजोर पड़ गया। लेकिन इसकी एक खतरनाक स्थिति बनी थी कि यह बांग्लादेश की ओर से भारत के पूर्वी तट तक जायेगा, जिससे 2.1 मिलियन लोगों को वहाँ से विस्थापित / निकाला गया था क्योंकि यह बाढ़ और संभावित रूप से घातक तबाही का रूप ले सकता था। कुल मिलाकर, संयुक्त राष्ट्र ने चेतावनी दी है कि तूफान के मार्ग में 28 मिलियन लोग खतरे में हैं।

9.0 गुजरात में चक्रवाती तूफान वायु (12 जून, 2019) :

उष्णकटिबंधीय चक्रवात वायु से छह मिलियन लोग प्रभावित होने की सम्भावना थी, जो उत्तर-पश्चिम भारत की ओर 12 जून, 2019, को बढ़ रहा था और गुजरात सुबह से गुजरात के समुद्र तट पर टकराने की सम्भावना थी। 12 जून, 2019, बुधवार को भारत के गृह मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने कहा कि लगभग 300,000 लोगों को 700 आश्रय घरों से निकाला जाना है। अधिकारियों ने कहा कि क्षेत्र में स्कूल और कॉलेज शुरुआत तक बंद किये गये हैं। 170 किमी प्रति घंटे (100 मील प्रति घंटे) की हवा के साथ, उष्णकटिबंधीय चक्रवात वायु दशकों बाद उत्तर पश्चिमी भारत पर हमला करने वाला सबसे विनाशकारी चक्रवात बन सकता है। यह भारत के उत्तरपूर्वी तट में शक्तिशाली ट्रॉपिकल साइक्लोन फेनी के एक महीने बाद आया था।

वायु चक्रवात 12 जून, 2019, बुधवार को मुंबई के पश्चिम में लगभग 300 किलोमीटर (185 मील) की दूरी तक की, जो उत्तर में गुजरात तटीय को ओर बढ़ रही था। पूर्वतुमान में तूफान को पश्चिम की ओर मुड़ने की सम्भावना की गयी थी, जो तूफान के केंद्र को अगले 48 घंटों में, सिर्फ अपतटीय क्षेत्रों में गुजरात के सौराष्ट्र प्रायद्वीप और कच्छ जिले के समानांतर चलना था। लेकिन भले ही तूफान आधिकारिक रूप से, जमीन क्षेत्र पर टकराने की सम्भावना न बनाता हो, उसके चक्रवाती केंद्र अथवा तूफान की गति बढ़ रही थी जिससे कम से कम आधा तूफान भूमि पर होने से तटीय क्षेत्र में सीधे बारिश, हवा और तूफान का वेग बना रहा। भारत ने 39-राष्ट्रीय आपदा राहत बल टीमा को वहाँ तैनात किया था। प्रत्येक टीमा में लगभग 45 लोगों थे, जो निवासि, डॉक्टर, नचाव और राहत कार्यों के लिये स्थानीय अधिकारियों की मदद से कार्य पर तत्पर रहे। सेना के पास भी स्टैंडबाय 34 टीमा थे।

भारत में 2019 के दौरान भीषण वर्षा और भूस्खलन:

भारत में मानसून का बेसब्री से इंतजार किया जाता है, जहाँ कुछ रणियां बारिश पर निर्भर हैं और जिसका जीवोपेय में महत्वपूर्ण अनुपात होता है। इस साल को मानसून में गिरावट ने कई राज्यों में रही परंतु वहीं पर तूफानों ने कहर बरपाया। जुलाई-अगस्त 2019 में, भारी बारिश के कारण उत्तरी राज्यों उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर हरियाणा में भूस्खलन से मुसीबत आ गई, और अन्य क्षेत्रों में जैसे- तटीय कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र में पुणे और मुंबई, गुजरात में बड़ौदा, अहमदाबाद, राजस्थान, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल के उत्तर पूर्व और पश्चिम भाग में तूफानी बाढ़ आ गई।

05 अगस्त 2019 तक आई आपदा

अरब सागर से तेज हवाओं का प्रवाह कोंकण क्षेत्र को प्रभावी रहा। तटीय महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल में 100 मिमी की कुल वर्षा सामान्यरूप में हुई तथा 150 मिमी तक भारी वर्षा स्थानीय रूप से हुई जिससे जन-जीवन अस्त-व्यस्त रहा। बंगाल की खाड़ी के दक्षिणी क्षेत्र से आने वाली तेज हवाएँ पूर्वोत्तर भारत को तर-वितर किया। जहाँ क्षेत्रीय वर्षा का विभाजन तीव्रता के आधार पर होता है। 1) गरज के साथ बारिश और बहुत भारी वर्षा होना-तटीय महाराष्ट्र, गोवा और तटीय कर्नाटक। 2) भारी और आंधीवाली बारिश-गुजरात, पूर्वी राजस्थान, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, कच्छ, और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह। 3) काफी व्यापक और गरज के साथ वर्षा-हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश,

हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, पश्चिम बंगाल, अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, बिहार, झारखंड, ओडिशा, आंतरिक महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंतरिक कर्नाटक, और आंध्र प्रदेश। 4) बिहारी हुई और गरज के साथ बारिश-जम्मू और कश्मीर और पश्चिम राजस्थान और 5) पृथक वर्षा और आंधी-तमिलनाडु, पश्चिम राजस्थान के एक हिस्से में अधिकतम तापमान 40°C या इससे अधिक होने की संभावना रहती है।

06 अगस्त 2019 और इससे आगे की आपदा

भारत, राजस्थान और मध्य प्रदेश के एक हिस्से में 07 अगस्त 2019, बुधवार सुबह तक 50 मिलीमीटर बारिश हुई, जो पश्चिमी और उत्तरी हवाओं के चलने के कारण रही। तीव्र और लंबे समय तक बारिश अचानक बाढ़ का कारण बन गई। बंगाल की उत्तरी खाड़ी के ऊपर एक चक्रवाती संकुलेशन धीरे-धीरे पश्चिम की ओर बढ़ा, जिससे मानसून हवा के कम दबाव का क्षेत्र बनने से स्थानीय भारी बारिश और गरज के साथ बारिश अधिकावत हुई। 08 अगस्त 2019, शुक्रवार को पूर्वी भारत, मध्य भारत और उत्तरी मैदान पर संकुलेशन बना रहा और उत्तरी मैदान के अगरी स्तर पर पश्चिमी विक्षोभ से एक सर्ज और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऊपर एक चक्रवाती परिचलन के कारण-मुख्य रूप से उत्तरी मैदानी क्षेत्र में गरज के साथ बारिश हुई। सप्ताहांत तक इसकी तीव्रता में बढ़ने की उम्मीद बनी रही। मध्य अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में किसी न किसी तरह की समुद्री तूफान का प्रभाव बना रहा। 40-50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली तेज हवाओं से, कोंकण क्षेत्र, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के तटीय स्थानों और सप्ताहांत तथा अगले सप्ताह में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में भी वर्षा होने की उम्मीद बनी रही।

उपरोक्त अध्ययन से, हमने पाया कि पहाड़ी क्षेत्र में अत्यधिक तबाही, धूल भरी आंधी, चक्रवाती तूफान और भूस्खलन वर्ष 2014 के बाद से संयुक्त राज्य अमेरिका से शुरू हुआ और अनेक दुनिया भर में इसकी आवृत्ति (फिक्सेस) कई गुना बढ़ गई हैं। सबसे बुरी तरह प्रभावित क्षेत्र अफ्रीका, कनाडा, ब्रिटेन, भारत, चीन, जापान, आईर्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड आदि हैं, जहाँ पर लोगों के हलाहल होने का खतरा, बुनियादी ढांचे को नुकसान-घरो, पुलों व पावर स्टेशन को बवाल ले जाने की स्थिति हर साल अटक हो रही है। यह केवल मानव निर्मित लोचल-वार्मिंग की समस्या के कारण है, जिसने पारिस्थितिक प्रणाली को पूरी तरह से अप्रभावी बना दिया है। विकसित और विकासशील देशों की जीवोपेय आपदा प्रबंधन नियंत्रण के भारी खर्च के कारण कम हो रही है। हमें पर्यावरणीय क्षति को न्यंत्रित करने के लिए अतिरिक्तिक पेड़ लगाकर हरियाली के क्षेत्रफल को 60% लाना होगा, जिससे प्रकृति में दुरु विल्टन को वापस लाना जा सके।

हमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जल-संचयन हेतु जलाशयों को पुनर्स्थापित कर पशुती को रीचार्ज करना होगा और अक्षय ऊर्जा को भी यथासंभव अधिकधिक उपयोग करना होगा। पृथ्वी (उत्तरी / दक्षिणी तट) से बर्फ पिघलने के कारण समुद्री सतह में वछोतरी होने से, पृथ्वी के घुमने की गति और कोण में परिवर्तन होना सम्भव है। वह एक काला दिवस हो सकता है - जब इस खूबसूरत पृथ्वी ग्रह पर - सम्पूर्ण जीवन-व व प्राणी अपने अंत के भयानक परिणामों का सामना करने हेतु बाध्य होंगे, वशतः हम अभी से सचेत हो जायें, जिससे स्थिति हमारे नियंत्रण से बाहर न हो जाएँ, जब लोचल वार्मिंग के इस दुष्परिणाम से हो रहे, अलवार्थ परिवर्तन को रोकने में मदद के लिए बहुत तेजी से कार्य करने का समय आ चुका है। अतः आइये आने वाली पीढ़ी के लिये पृथ्वी के सम्मानार्थों के दोहन को रोके व हरियाली को बढ़ाकर पृथ्वी और जीवन को बचाने का प्रयास करें।